नाम : डॉ० सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - XII
अंक - 100

कवि : विनोद कुमार शुक्ल
दिनांक - 27.05.2020

शीर्षक - 'प्यारे नन्हें बेटे को' कविता का सारांश

'प्यारे नन्हें बेटे को' कविता का सारांश :

समकालीन कवि 'विनोद कुमार शुक्ल द्वारा रचित यह कविता मध्यम वर्गीय व्यक्ति और उनके बच्ची के बीच होती वार्तालाप की शैली में रचित है। पिता अपनी बिटिया से पूछता है कि आस-पास लोहा कहाँ है, फिर पूरा परिवार मिलकर लोहा ढूँढता है। अपनी बेटी को लोहा के संबंध में जानकारी भी देता है। इस कविता में 'लोहे' को कर्म का प्रतीक माना गया है। जो आज हर जगह अपनी उपस्थिति दर्ज करवाकर, समाज को मजबूती प्रदान कर रहा है। कविता में लोहे की पहचान अपनी आसपास की वस्तुओं में ही की गयी है। कवि के द्वारा उसे, फावड़ा, कुदाली आदि निर्माण कार्यों में प्रयुक्त होनेवाली चीजों से जोड़कर देखा गया। बिटिया इसे चिमटी, कब्जे, सिगड़ी, दरवाजे की सांकल से जोड़कर बताती है। वहीं कवि-पत्नी के अनुसार, उन चीजों की तरफ संकेत किया जाता है, जहाँ औरतों के द्वारा व्यवहृत चीजें होती हैं, जैसे; पानी की बाल्टी, चाकू, हंसिया, जिससे वे प्रयोग करती हैं। इस प्रकार कवि, उनकी बिटिया और उनकी पत्नी के द्वारा लोहे की पहचान की गयी। ये सभी रूप परिवार, श्रम और राष्ट्रनिर्माण के मूल्यों और आवश्यकताओं को चित्रित करते हैं। कवि की बिटिया रुक-रुककर फिर याद कर उन्हें सेफ्टीपिन, साइकिल की याद दिलाती है। कवि के अनुसार 'लोहा' कर्म और मजबूती का प्रतीक है। कोई भी उसका शोषण नहीं कर सकता।

Scanned with CamScanner

लोहा एक अत्यंत ही कठोर धातु है। यह शक्ति के रूप में जाना जाता है। उससे निर्मित हुए बहुत सी वस्तुओं का हम अपने जीवन पर्यन्त उपयोग करते हैं। लोहा पृथ्वी के गर्भ में स्थित होकर अनेक यातनाएँ सहता है। बाहर आकर भी वह अनेक कठिनाईयों का सामना करता है। उसे पीट-पीटकर, गलाकर मनचाहा रूप मिलता है, जिसे वह मजबूती से धारण करता है। ठीक उसी प्रकार एक मेहनती व्यक्ति और दबी-सतायी, बोझ उठानेवाली औरत का जीवन लोहा से साम्यता लिए रहता है। वे दोनों ही कठोर श्रम और कठिनाईयों को सहते हुए भी एक मजबूत समाज का निर्माण कर रहे हैं। लोहा किसी भी गृहस्थी में सर्वव्याप्त है और ठोस होते हुए भी हमारे दैनंदिन में घुला-मिला है।

दूसरी ओर समाज का शोषित मजदूर वर्ग भी 'लोहे' के समान ही हमारे समाज को मजबूती प्रदान करता है। वह मजदूर भी अनेक पीड़ा को सहते हुए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। समाज के प्रत्येक निर्माण कार्य धुरी के समान ही वह मजदूर, समाज को स्थिरता प्रदान करता है, मजबूती से पकड़े रहता है। मगर वही मजदूर आज शोषित है।

ठीक उसी प्रकार कवि यह भी मानता है प्रत्येक सतायी हुई, बोझ उठाती औरत लोहा है। वह अपने ऊपर होते अत्याचारों को सहती है और, फिर भी पूरे परिवार का बोझ उठाए चलती है। आगे कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं:—

कि हर वो आदमी
जो मेहनतकश लोहा है
हर वो औरत
दबी, सतायी बोझ उठानेवाली, लोहा।

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत कविता में कवि अपनी बिटिया से कुछ पूछना चाहते हैं और उन्हें पूर्ण विश्वास है कि इसका उत्तर वह जरूर देगी। वह अपनी बेटी को लोहे का महत्व बतलाना चाहते हैं, क्योंकि लोहा मानव जीवन की एक अमूल्य निधि है।

कल्पनाशीलता में चलती यह कविता समाज की निर्माण के पीछे का मूल, उसकी आधार स्तंभ की व्यंजना करती है। 'लोहे' को प्रतीक मानकर, उसकी सर्वव्याप्त में उपास्थिति तथा शक्तिशाली रूप का चित्रण मिलता है। उसी प्रकार शोषित मजदूर, पुरुष, दबी औरत को 'लोहे' का पर्याय मानकर समाज की शक्तिशाली स्तंभ का सारगर्भित रूप मिलता है।

Scanned with CamScanner